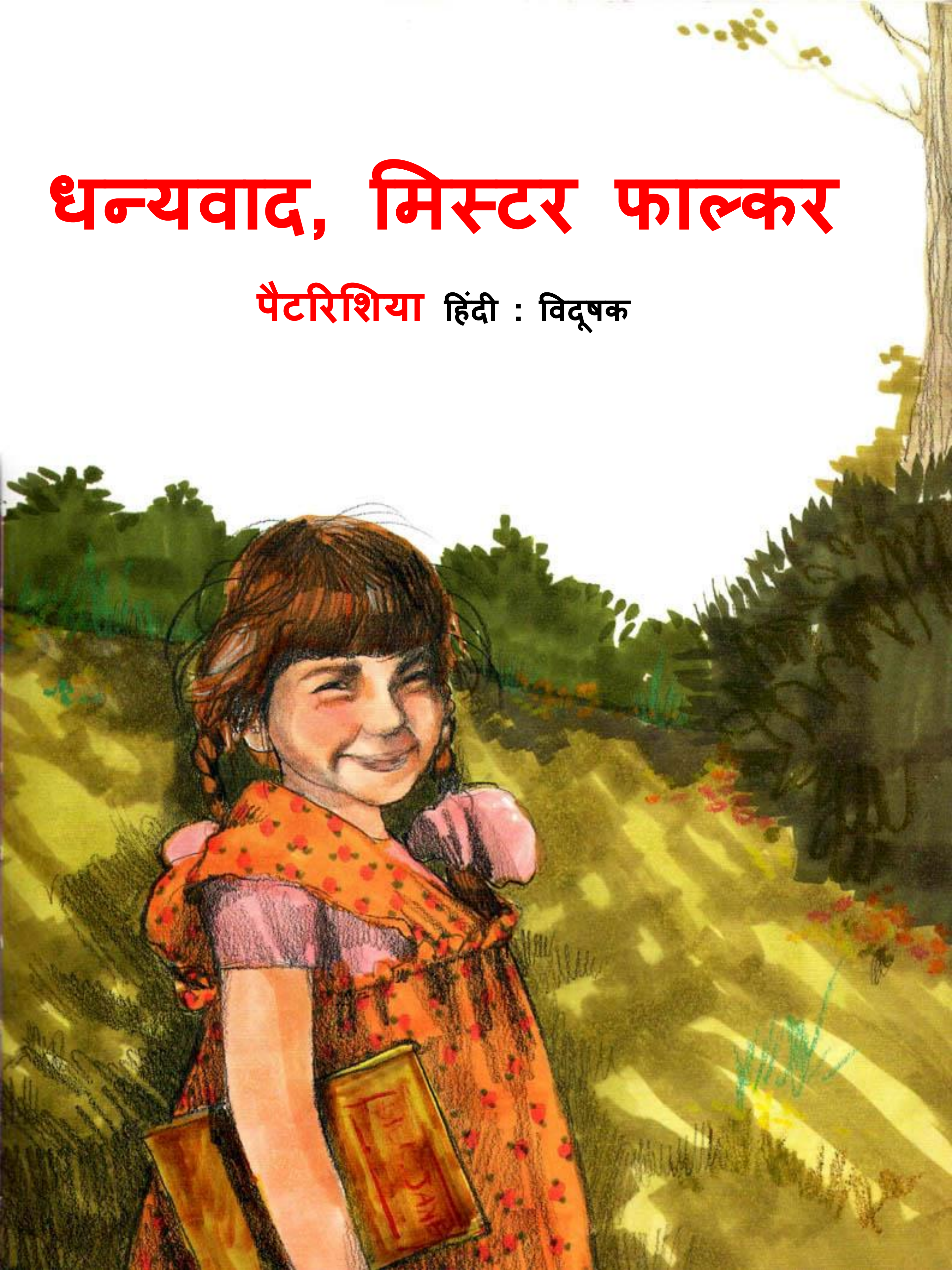
धन्यवाद, मिस्टर फाल्कर

पैटरिशिया हिंदी : विदूषक



धन्यवाद, मिस्टर फाल्कर

पैटरिशिया हिंदी : विदूषक





नानाजी ने शहद के मर्तबान को ऊपर उठाया जिससे कि पूरा परिवार उसे देख सके. फिर उन्होंने एक चम्मच शहद लेकर, उसे एक छोटी किताब के कवर पर उंडेला.

वो छोटी लड़की अभी बस पांच साल की हुई थी.

"खड़ी हो, छोटी बेटी," नानाजी ने प्यार से कहा. "यह मैंने पहले तुम्हारी माँ, तुम्हारे मामा, और तुम्हारे बड़े भाई के साथ किया था. अब इसे मैं तुम्हारे साथ दोहरा रहा हूँ!"

फिर उन्होंने उस छोटी लड़की को वो किताब दी और कहा, "इस चखो!"

लड़की ने अपनी उंगली से शहद को चाटा.

"कैसा स्वाद है?" नानी ने पूछा. छोटी लड़की ने उत्तर दिया, "मीठा!"

फिर पूरे परिवार ने मिलकर एक आवाज़ में कहा, "हाँ, ज्ञान भी उसी तरह मीठा होता है. ज्ञान उस मधुमक्खी जैसा है जिसने शहद को मीठा बनाया. इसलिए तुम किताब के पन्नों में उस मधुमक्खी का पीछा करो.

तब उस छोटी लड़की को पता चला कि अभी-अभी उसने, पढ़ना सीखने का वादा किया था. अब वो जल्द से पढ़ना सीखेगी.



तृषा – घर में सबसे छोटी लड़की थी. वो किताबें पढ़ते-पढ़ते बड़ी हुई थी. माँ स्कूल टीचर थीं. वो हर रात उसे किताबें पढ़कर सुनती थीं. लाल बालों वाला उसका भाई स्कूल की लाइब्रेरी से किताबें उधार लाता और अपनी बहन को पढ़ने को देता. और जब कभी वो परिवार के फार्म पर जाती तो वहां नाना-नानी, पत्थर के अलाव के पास बैठाकर उसे किताबें पढ़ते.

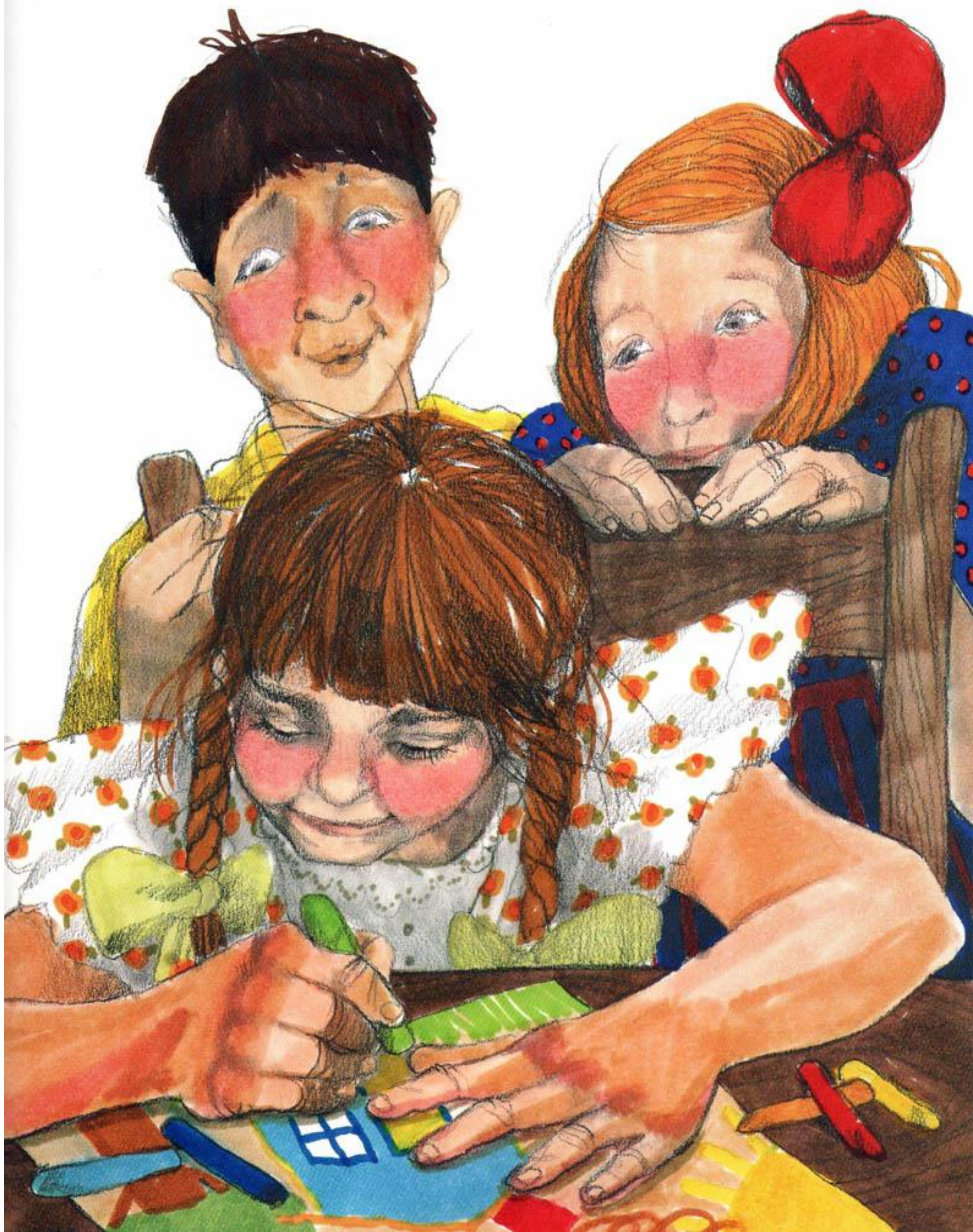
पांच साल की उम्र में जब वो स्कूल गई, तो वहां वो पढ़ना सीखना चाहती थी. हर रोज़ वो पहली कक्षा के बच्चों को, हाल में किताबें पढ़ते हुए देखती. साल ख़त्म होने से पहले ही खुद उसकी क्लास के कुछ बच्चों ने पढ़ना शुरू कर दिया था.

पर तृषा ने नहीं.

उसे स्कूल जाने में मज़ा आता था, क्यूंकि वो वहां चित्रकारी (ड्राइंग) कर सकती थी. जब वो मोम के क्रेयॉन्स से चित्र बनाती तो उसके चित्रों का जादू देखने के लिए उसके आसपास बच्चों की भीड़ जमा हो जाती.

“पहली क्लास में तुम्हें पढ़ना सीखना पड़ेगा,” उसके भाई ने कहा.






LOOK, LOOK.
SEE
RUN.
SEE

पहली क्लास में तृषा, दूसरे बच्चों के साथ गोले में बैठती. सब के हाथ में *हमारे पड़ोसी* – पहले दर्जे की किताब होती. बाकी बच्चे रुक-रुक कर पढ़ने का प्रयास करते. जब बच्चे शब्दों को ठीक पढ़ते तो टीचर उनकी ओर मुस्कुरातीं और उन्हें प्रोत्साहित करतीं.

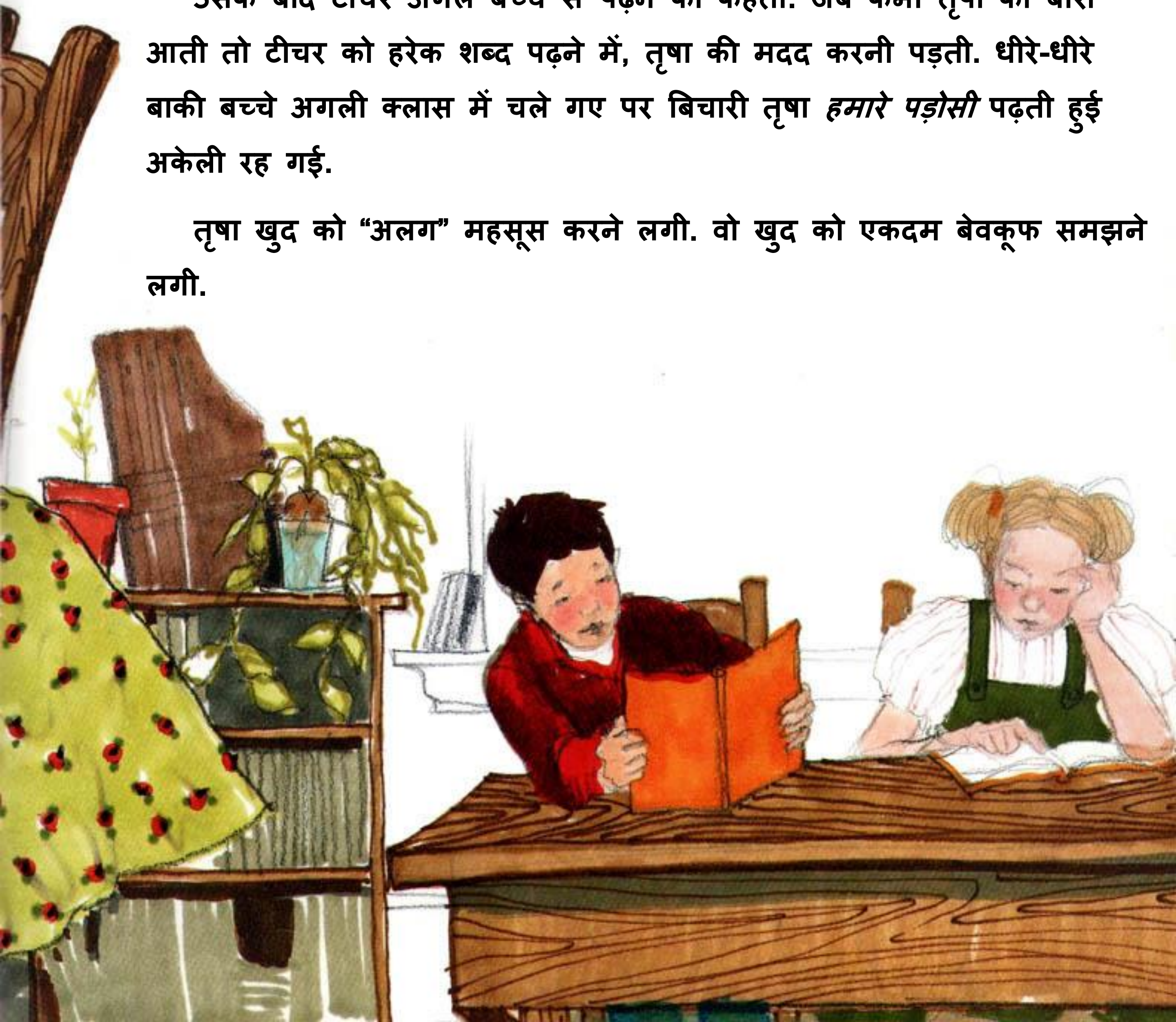
पर जब तृषा, किताब के पन्ने की ओर देखती तो उसे सिर्फ चील-मकोड़े ही दिखाई देते. जब कभी वो पढ़ने की कोशिश करती, तो बाकी बच्चे उसपर हँसते.

"तृषा, तुम भला उस किताब में क्या देख रही हो?" बच्चे पूछते.

"मैं पढ़ रही हूँ!" वो उन्हें जवाब देती.

उसके बाद टीचर अगले बच्चे से पढ़ने को कहतीं. जब कभी तृषा की बारी आती तो टीचर को हरेक शब्द पढ़ने में, तृषा की मदद करनी पड़ती. धीरे-धीरे बाकी बच्चे अगली क्लास में चले गए पर बिचारी तृषा *हमारे पड़ोसी* पढ़ती हुई अकेली रह गई.

तृषा खुद को "अलग" महसूस करने लगी. वो खुद को एकदम बेवकूफ समझने लगी.





तृषा को शब्द पढ़ना जितना कठिन लगता, ड्राइंग उसे उतनी ही आसान लगती. उसे चित्र बनाने में कितना आनंद आता! या सिर्फ बैठकर सपने देखने में. उसे नानी के साथ घूमने जाने में भी बहुत मज़ा आता था.

एक गर्मी वाले दिन, नानी और तृषा फार्म के पीछे के जंगल में घूम रहे थे. रात होने वाली थी. हवा गर्म थी और उसमें भीनी खुशबू थी. घास में एकाध जुगनू भी चमकने लगे थे.

चलते-चलते तृषा ने नानी से पूछा, "नानी, क्या मैं बाकी बच्चों से "अलग" हूँ?"

"बिल्कुल," नानी ने जवाब दिया. "अलग होना ही तो जीवन का चमत्कार है. तुम वहां उन जुगनुओं को देख रही हो? वो सभी जुगनू एक-दूसरे से "अलग" हैं."

"आपकी राय में क्या मैं होशियार हूँ?" तृषा खुद को बुद्धू समझने लगी थी.

नानी ने उसको गले लगाया. "तुम दुनिया की सबसे होशियार, तेज़ और प्यारी बच्ची हो."

उस समय उस छोटी लड़की को, नानी की छाती से चिपककर बहुत अच्छा लगा. पढ़ना अब इतना महत्वपूर्ण नहीं लगा.



तृषा की नानी कहती थीं कि तारे, आसमान के परदे पर, छोटे-छोटे छेद हैं. उन छेदों में से, स्वर्ग की रोशनी, छन-छन कर आती है. वो यह भी कहतीं कि एक दिन वो वहां होंगी जहाँ से रोशनी आती है.

एक रात वे दोनों घास में लेटे रहे और उन्होंने स्वर्ग से आने वाली रोशनियों को गिना. "तुम्हें पता है," नानी ने कहा, "एक दिन हम सभी लोग वहां जायेंगे. इसलिए घास को दोनों मुट्ठियों से कसकर पकड़े रहो, नहीं तो तुम वहां पहुँच जाओगी!"

फिर वे दोनों हँसे, और उन्होंने घास को कसकर पकड़ा.

पर उस रात के बाद नानी की घास पर पकड़ कुछ ढीली हुई क्यूंकि वो जल्दी ही आसमान के परदे के दूसरी तरफ की रोशनी में चली गईं. कुछ समय बाद नाना ने भी घास को छोड़ दिया.

अब तृषा को स्कूल मुश्किल, और बहुत मुश्किल लगने लगा.



तृषा के लिए पढ़ना बहुत मुश्किल हो गया था. जब सू-एल्यिन अपना पन्ना पढ़ती, या टॉमी अपनी किताब पढ़ता तो वो इस काम को बहुत आसानी से करते. अक्सर तृषा उनके सिर के ऊपर देखती – क्या उनके सिर में कुछ ऐसा है, जो उसके पास नहीं है.

तृषा के लिए नंबर पढ़ना तो सबसे मुश्किल और दूभर काम था. वो कभी भी नंबरों को ठीक से नहीं जोड़ पाती थी.

"अंकों को जोड़ने से पहले उन्हें एक सीधी लाइन में खड़ा करो," टीचर कहतीं. पर जब तृषा कोशिश करती तब वे नंबर उसे एक-दूसरे पर टिके, लकड़ी के गुटके दिखाई पड़ते. वो गुटके बस गिरने वाले थे.

तृषा को अब पता चला कि वो वाकई में बुद्धू थी.

फिर एक दिन तृषा की माँ को कैलिफ़ोर्निया में एक पढ़ाने की नौकरी मिली. कैलिफ़ोर्निया, उनके फार्म, मीशिगेन से बहुत दूर था.





Todays Wonder
is
4
+4 can you
8
READ

वैसे अब फार्म पर तृषा के नाना-नानी नहीं रहे थे, फिर भी वो फार्म को छोड़कर नहीं जाना चाहती थी. हो सकता है नए स्कूल के बच्चों को, उसके बेवकूफ होने का पता न हो?

उसके बाद तृषा, उसका भाई और माँ, अपनी पुरानी कार में बैठकर कैलिफ़ोर्निया के लिए रवाना हुए. सफ़र में उन्हें पूरे पांच दिन लगे.





पर तृषा का नए स्कूल में भी वही आलम था. जब कभी वो पढ़ने की कोशिश करती, हर बार वो ठोकर खाकर गिरती. उसके पढ़ने की कुशलता, तीसरे क्लास के बच्चे से भी बदतर थी!

जब टीचर बच्चों के साथ मिलकर पढ़तीं और बीच में तृषा से कोई प्रश्न पूछतीं, तो तृषा से उन्हें हमेशा गलत जवाब ही मिलता.

"क्यों बुद्धू!" खेल के मैदान में एक लड़के ने उसे चिढ़ाया. "भला तुम इतनी बेवकूफ क्यूं हो?" यह सुनकर आसपास खड़े बच्चे, ज़ोर से हँसे.

तृषा से यह सहा नहीं गया. उसकी आँखों में आंसू छलक आए. उसे मिशिगेन में अपने नाना-नानी के फार्म की बेहद याद आई.





तृषा का अब स्कूल जाने को, बिल्कुल मन नहीं करता था. “मेरे गले में खरान्शे हैं,” वो माँ से बहाना बनाती. या फिर, “आज मेरा पेट दर्द कर रहा है.” वो अब दिन बार सपने देखती और चित्र बनाती. उसे स्कूल से पूरी तरह से नफरत हो गई थी.

फिर जब तृषा पांचवी क्लास में गई तो उसने एक नई बात सुनी. उनकी क्लास में एक नए टीचर आने वाले थे. वो ऊंचे और शिष्ट थे. वो बहुत साफ़-सुथरे कपड़े पहनते थे. सबको उनका धारीदार कोट और सिलेटी पैंट बहुत पसंद थी.

नए टीचर क्लास में आए. सभी चाटुकार बच्चे जैसे - स्टीव जो, ऐलिस मैरी, डेवी और माइकल-ली – नए टीचर के आसपास मंडराने लगे. पर मिस्टर फाल्कर पर उसका कोई असर नहीं पड़ा. उनकी रूचि सुन्दर, होशियार और कुशल बच्चों में नहीं थी.





Aa Bb Cc
148
X2
55
X3
Hi
I'm Mr. Falke


all children have
gifts, some open
them at
different
times.

जब कभी भी तृषा ड्राइंग कर रही होती, तब मिस्टर फाल्कर उसके पीछे खड़े हो जाते और हल्के से कहते, "लाजवाब ... एकदम सुन्दर! क्या तुम्हें अपने हुनर के बारे में कुछ पता है?"

जब मिस्टर फाल्कर यह कहते तो वे बच्चे, जो हमेशा तृषा को चिढ़ाते थे भी आकर उसकी बनाई ड्राइंग को देखते. पर जब कभी तृषा गलत उत्तर देती तो वे हमेशा हँसते.

फिर एक दिन उसे क्लास में सबके सामने खड़े होकर पढ़ने को कहा गया. यह उसे बिल्कुल नापसंद था. वो *शेर्लोट वेब* किताब का, एक पन्ना पढ़ने की कोशिश कर रही थी. उससे यह बिल्कुल नहीं बन पा रहा था. उसे देखकर बच्चे खिलखिला कर हंसने लगे.

तब मिस्टर फाल्कर ने बच्चों को फटकारते हुए कहा, "चुप रहो! क्या तुम सब ज्ञान के भंडार हो, जो उस छोटी लड़की की गलतियों पर हंस रहे हो?"



बच्चों के तृषा पर हंसने का, वो आखरी दिन था. फिर किसी ने उसका मज़ाक नहीं बनाया. पर एक लड़का एरिक कुछ अलग ही मिट्टी का बना था. वो दो पूरे साल, तृषा की पीछे वाली बेंच पर बैठा. उसे तृषा से भयंकर चिढ़ थी. क्यूं? यह तृषा को भी नहीं पता था.

एरिक क्लास के दरवाज़े के पीछे छिपकर खड़ा रहता और तृषा के बाल खींचता. वो खेल के मैदान में उसके पास आता और तृषा को "मेंढक!" बुलाता.

अब तृषा, स्कूल के किसी भी कोने में जाने से घबराती – न जाने कहाँ एरिक ताक लगाये बैठा हो? इससे तृषा बहुत उदास रहती, और खुद को बहुत अकेला महसूस करती.

वो सबसे खुश तब होती जब मिस्टर फाल्कर उसके आसपास होते. मिस्टर फाल्कर तृषा को ब्लैकबोर्ड साफ़ करने का काम देते – यह काम क्लास के सर्वश्रेष्ठ बच्चे को दिया जाता था. जब तृषा किसी प्रश्न का सही उत्तर देती तो मिस्टर फाल्कर उसकी पीठ थपथपाते. जो भी बच्चा तृषा को परेशान करता, मिस्टर फाल्कर उसकी अच्छी तरह खबर लेते.

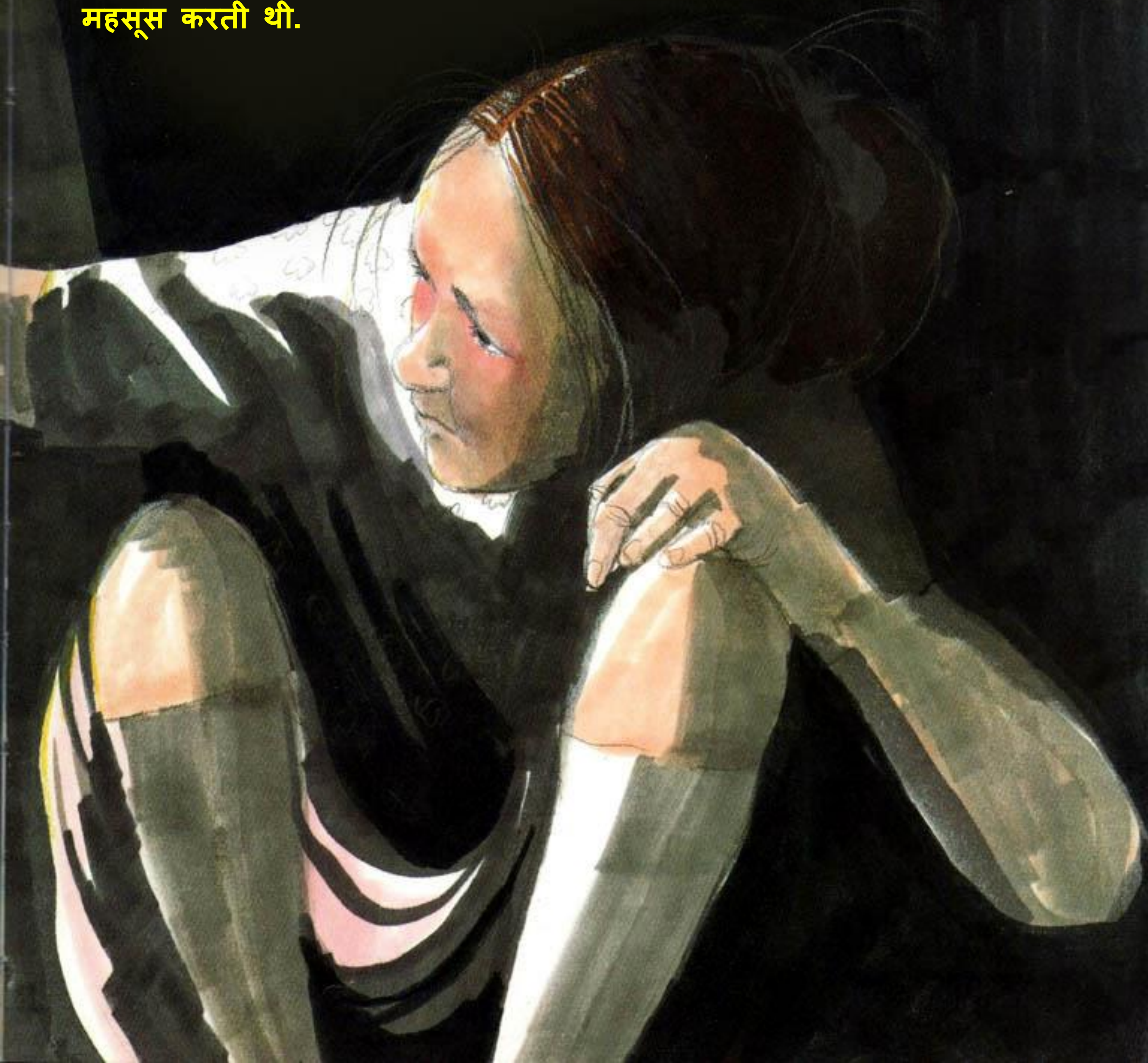

You don't count
NO HOPER
stupid
toad!
hey dummy
You're ugly!
dummie
dummy!
stupid
You don't
not one of us
UGLY
stupid



पर तृषा की ओर मिस्टर फाल्कर का, जितना अच्छा रवैय्या था, एरिक उससे उतनी ही ज्यादा बदतमीजी से पेश आता था. एरिक सब बच्चों को खेल के मैदान में, या कैंटीन अथवा बाथरूम में इकट्ठा करता. फिर जैसे ही तृषा वहां आती वे सब कूदकर उससे कहते "गधी!" या "चुड़ैल!"

धीरे-धीरे तृषा को उनकी बातों पर यकीन भी होने लगा.

दोपहर की छुट्टी से पहले अगर तृषा को बाथरूम जाना होता, तो वो सीढ़ियों के नीचे एक खाली, सुनसान कोने में अकेली छिप जाती. फिर दोपहर की छुट्टी में वो डर के मारे वहीं छिपी बैठी रहती. उस अँधेरे कोने में वो खुद को पूरी तरह सुरक्षित महसूस करती थी.





पर एक दिन दोपहर की छुट्टी में एरिक ने तृषा की छिपने वाली जगह भी ढूँढ निकाली. "क्या तुम चुहिया हो, जो इस बिल में आकर छिपती हो?" कहकर वो हंसा. फिर वो तृषा की कलाई खींचता हुआ उसे हाल में लाया और फिर गोल-गोल नाचते हुए चिल्लाने लगा "गूंगी, मूर्ख, बुद्धू, बेवकूफ!"

तृषा ने अपने सिर को अपने दोनों हाथों में छिपा लिया और गोल गेंद जैसे मुड़कर बैठ गई. अचानक उसे कुछ क़दमों की आहट सुनाई दी. वो मिस्टर फाल्कर थे.

मिस्टर फाल्कर, एरिक को प्रिंसिपल के कमरे में ले गए. फिर वो लौट कर आए और उन्होंने तृषा को देखा. "अब तुम फिर्क मत करो. अब से वो लड़का तुम्हें कभी परेशान नहीं करेगा," उन्होंने हल्के से कहा.

"वो तुम्हें किस लिए चिढ़ा रहा था?"

"मुझे पता नहीं," तृषा ने कहा.



तृषा एक बात पक्की तरह से जानती थी - मिस्टर फाल्कर को यकीन था कि वो एक दिन ज़रूर पढ़ पायेगी. पास वाला बच्चा क्या पढ़ रहा था, उसे तृषा अच्छी तरह याद कर लेती और फिर वो मिस्टर फाल्कर के आने का इंतज़ार करती. वो जिस वाक्य पर अटकी होती, मिस्टर फाल्कर उसकी मदद करते. फिर तृषा उस वाक्य को बिल्कुल वैसे ही दोहराती जैसा उसके टीचर ने बताया था. "बहुत अच्छा," फिर वो कहते.

एक दिन मिस्टर फाल्कर ने तृषा से, स्कूल के बाद रुकने और सब ब्लैकबोर्ड साफ़ करने को कहा. बाद उन्होंने संगीत का केसेट लगाया और अपने टिफ़िन में से दो सैंडविच निकालीं. वो दोनों, काम करते-करते बातें भी करते रहे.

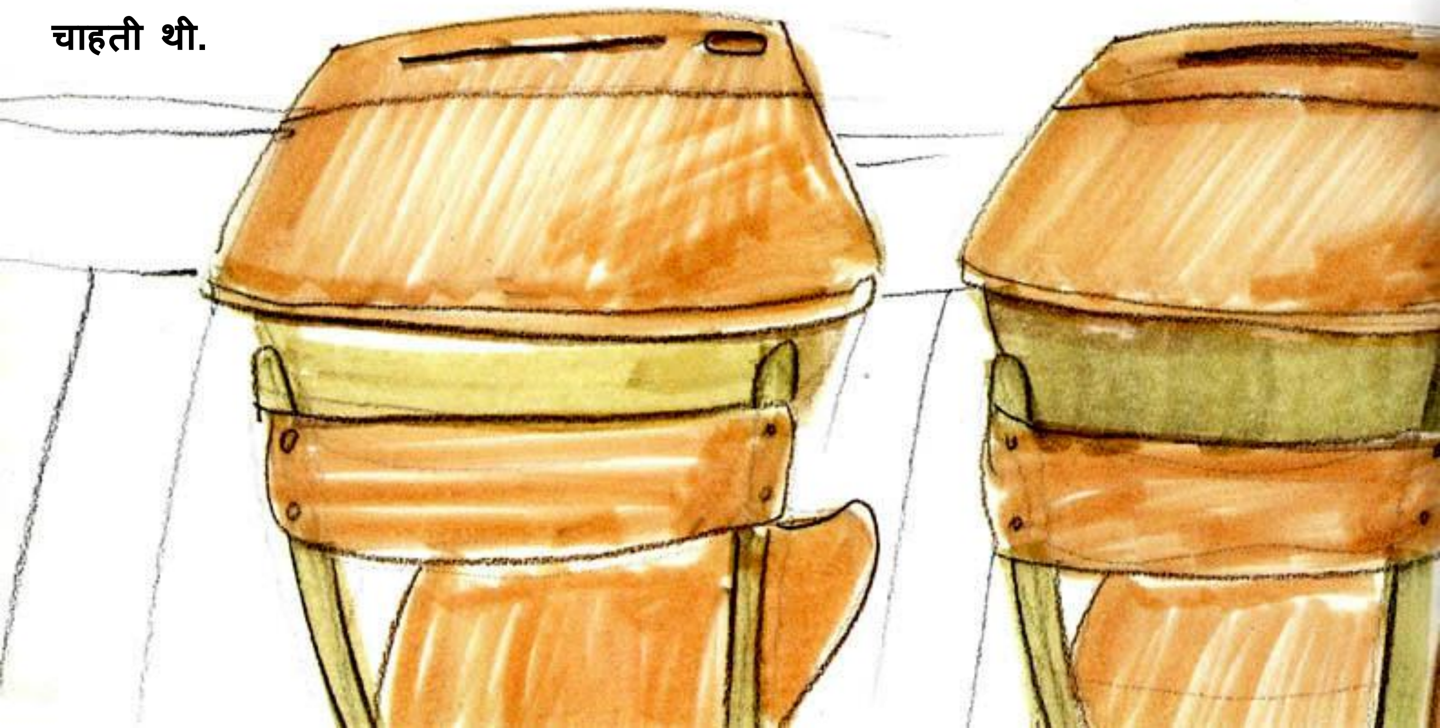
फिर अचानक मिस्टर फाल्कर ने कहा, "चलो एक खेल, खेलते हैं! मैं कुछ शब्द बोलूँगा और तुम गीले स्पंज से, जितनी तेज़ी से संभव हो उन्हें, ब्लैकबोर्ड पर लिखना.

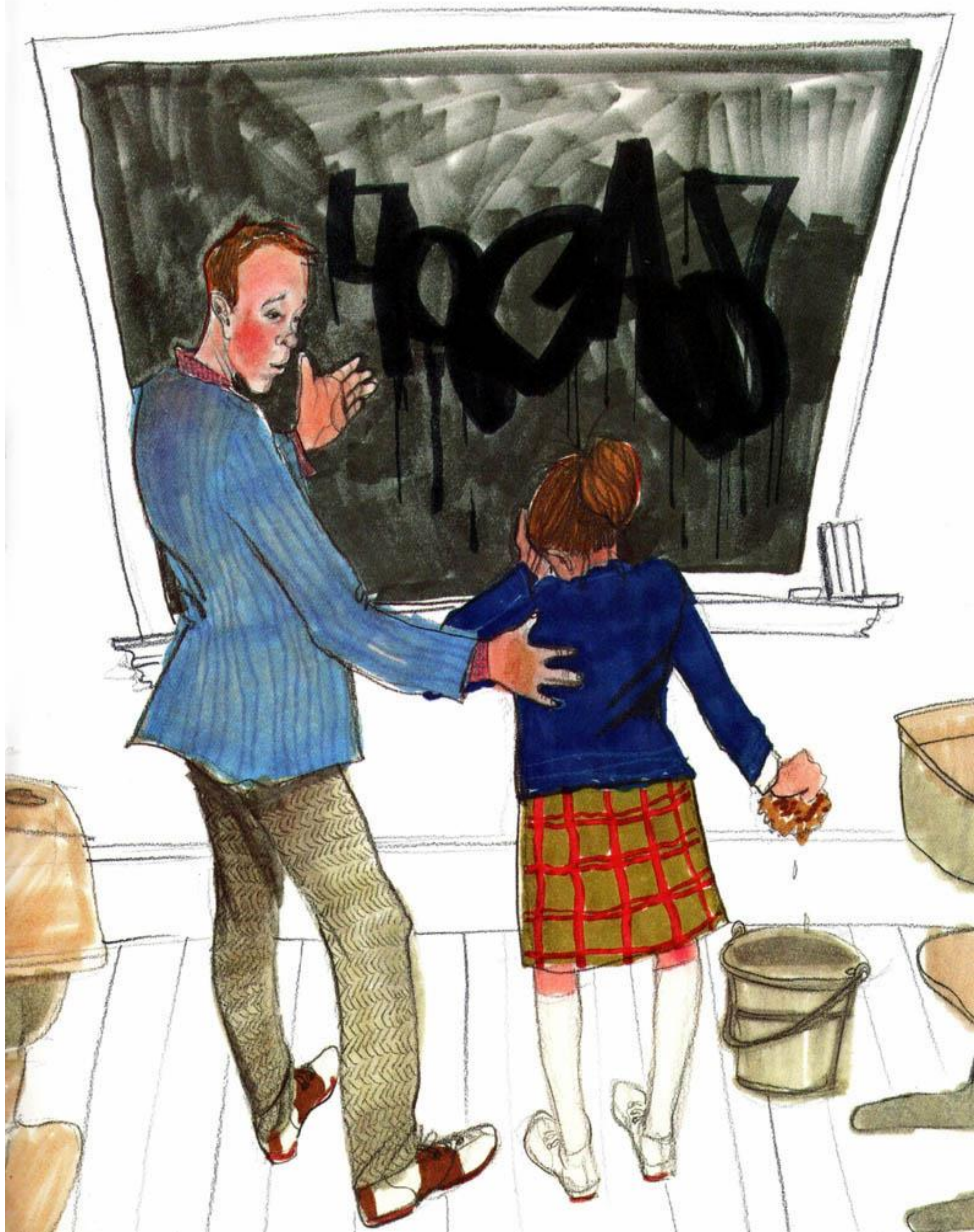
"A," वो चिल्लाये. तृषा ने पानी से A लिखा.

"8" वो चिल्लाये. फिर उसने 8 बनाया.

इस तरह मिस्टर फाल्कर ने तमाम अक्षर, शब्द और नंबर बोले. अंत में वो ब्लैकबोर्ड पर तृषा के पास आए और दोनों ने ब्लैकबोर्ड को देखा.

बोर्ड पर बड़े बेतरतीब ढंग से अक्षर लिखे थे. तृषा को पता था कि उसने अक्षरों और नंबरों को सही तरीके से नहीं लिखा था. वो गीले स्पंज को फेंककर, वहां से भागना चाहती थी.







पर मिस्टर फाल्कर ने कलाई पकड़कर उसे रोका. फिर वो उस बच्ची के सामने घुटने टेककर बैठे और उन्होंने कहा. "तुम सोचती हो कि तुम बुद्धू और बेवकूफ हो. क्यूं हैं न? तुम कितनी अकेली और डरी हुई हो?"

तृषा रोने लगी.

"मेरी प्यारी बच्ची, तुम अक्षरों और अंकों को अन्य लोगों की तरह नहीं देखती हो. तुम न जाने कितने अच्छे टीचर्स को, बुद्धू बनाकर, स्कूल में इतनी ऊपर आई हो!" फिर मिस्टर फाल्कर, तृषा को देखकर मुस्कुराये. "जो कुछ तुमने किया उसके लिए बहुत होशियारी और हिम्मत चाहिए."

फिर उन्होंने खड़े होकर ब्लैकबोर्ड को साफ़ किया. "अब हम इस तस्वीर को बदलेंगे. तुम ज़रूर पढ़ना सीखोगी – मैं तुमसे यह वादा करता हूँ."



उसके बाद रोजाना, स्कूल ख़त्म होने के बाद तृषा, मिस्टर फाल्कर और मिस प्लेसी से मिलती. मिस प्लेसी – पढ़ना सिखाने की, एक विशेषज्ञ टीचर थीं. उन्होंने बहुत सारी ऐसी चीज़ें करीं जो तृषा को बिल्कुल समझ में नहीं आईं! पहले उन्होंने रेत में गोले बनावाए, फिर ब्लैकबोर्ड पर स्पंज से बड़े-बड़े गोले बनावाए – जो हमेशा बाएं से दायें होते थे.

फिर एक दिन उन्होंने तृषा को स्क्रीन पर कुछ शब्द दिखाए, और तृषा ने उन्हें ज़ोर से बोला. बाकी दिन वो लकड़ी के गुटकों से शब्दों का निर्माण करती रहती थी. शब्द, शब्द, शब्द. जब तृषा उन्हें ज़ोर से बोलती, तो उसे अच्छा लगता था.

अब वो शब्द ज़रूर पढ़ सकती थी, पर अभी तक उसने पूरे वाक्य नहीं पढ़े थे. इसलिए वो अपने आपको अभी भी बुद्धू समझती थी.

फिर वसंत आया. नए तरीके से सीखते उसे तीन-चार महीने हो गए थे, मिस्टर फाल्कर ने उसके सामने एक किताब रखी. तृषा ने वो पुस्तक पहले कभी नहीं देखी थी. उन्होंने, उससे किताब के बीच में से एक अंश पढ़ने को कहा.

मालूम नहीं क्या जादू हुआ, या फिर उसके दिमाग में रोशनी चमकी, वो शब्द और वाक्य उसे अच्छी तरह दिखाई देने लगे. तृषा ने ऐसा पहले कभी नहीं महसूस किया था. धीरे-धीरे करके उसने एक पूरा वाक्य पढ़ा. फिर एक और... अंत में वो पूरा अंश पढ़ गई. और जो कुछ भी उसने पढ़ा वो उसे समझ में भी आया.

तृषा ने गौर नहीं किया पर उस दिन मिस्टर फाल्कर और मिस प्लेसी की आँखों में आंसू थे.





उस दिन तृषा फुल-स्पीड में घर दौड़कर वापिस आई. एक लम्बी साँस में वो घर के दरवाज़े के सामने खड़ी थी. फिर वो भोजन कक्ष से होकर किचन में गई. उसने अल्मारी खोली और फिर स्टूल पर चढ़कर उसमें से शहद की बोतल निकाली.

फिर किताब के शेल्फ से उसने वही पुस्तक उतारी जो नाना ने बहुत साल पहले उसे दिखाई थी. उसने किताब के कवर पर एक चम्मच शहद उंडेला और उसके मिठास को चखा. "शहद मीठा - ज्ञान जैसा है. पर ज्ञान उस मधुमक्खी जैसा है जो शहद बनाती है. किताब के पन्नों में उस मधुमक्खी का पीछा करो!"

फिर उसने उस किताब को, शहद समेत अपने सीने से लगाया. उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे. वो उन्हें अपने गालों पर महसूस कर रही थी. पर वो दुःख और अफ़सोस के आंसू नहीं थे – वो आज बेहद खुश थी!

उस छोटी लड़की का बाकी पूरा साल खोजने और सीखने में बीता. अब उसे स्कूल से बेहद प्रेम हो गया था. यह मुझे इसलिए पता है क्यूंकि वो छोटी लड़की मैं खुद थी – पैटरिशिया पोलाक्को.

तीस साल बाद एक शादी पर मेरी भेंट मिस्टर फाल्कर से हुई. मैं उनके पास गई और मैंने उन्हें अपना परिचय दिया. पहले मुझे पहचानने में उन्हें कुछ दिक्कत हुई. फिर मैंने उन्हें अपने पूरी कहानी सुनाई और बताया कि उन्होंने इतने साल पहले, मेरी ज़िन्दगी को कैसे बदला था.

फिर मिस्टर फाल्कर ने मुझे अपने गले लगाया. मेरा पेशा क्या है? मैं अपनी रोजी-रोटी के लिए क्या करती हूँ? उन्होंने पूछा. मैंने उत्तर दिया. "मैं बच्चों के लिए लिए किताबें लिखती हूँ ..... धन्यवाद मिस्टर फाल्कर, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया."



